Integral Research (Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal) ISSN: 3048-5991
Journal home page: https://integralresearch.in/, Vol. 02, No. 02, February. 2025

शाह आलम की ज़ुबान से: महुआ डाबर और स्वतंत्रता संग्राम की अनकही दास्तान

Harshit Singh
Independent Researcher
Kanpur, U.P. India.

https://www.ayodhyafilmfestival.com/p/the-founders.html?m=1

1. *कृपया हमें अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में संक्षेप में बताएं। अपने पितृपक्ष और मातृपक्ष के साथ-साथ अपनी जन्मभूमि और प्रारंभिक शिक्षा के स्थान पर भी प्रकाश डालें।*

पितृपक्षः श्रीराम के कुलगुरु वशिष्ठ जी को समर्पित भूमि बस्ती का रणकौशल तो कोशल राज्य के जमाने से ही प्रसिद्ध रहा है। यह परम्परा नागवंशियों, प्रतिहारों व भरों ने कायम रखी। लेकिन, जैसे भादों बीत के बाद नदी अपने फांट में कंकड़ और बालू छोड़ जाती है, वैसे ही अब भी उस परम्परा के चिन्ह बिखरे हैं। बस्ती की पुरातन पहचान मलिन हो रही थी। तब, किसानों के हल ने इस भूमि को नई पहचान दी। शस्य श्यामल धरती ने दूर दराज के लोगों को बसने के लिए आकर्षित किया। हमारे पूर्वज सैन्य मामलों में कुशल थे, और उनकी वंश परम्परा चौहान राजपूतों से जुड़ी थी जिसने इस मिट्टी के लिये कई बार रक्त बहाया था। लिहाजा बस्ती जनपद के कनैला गांव में ठाकुरों की बड़ी जमींदारी थी। उन्होंने मित्रवत परबाबा के पिता जी को आमंत्रित कर कनैला गांव में बसाया। एक दिन सभी बैठे बातचीत कर रहे थे तो परबाबा के पिता ने कहा कि हमारी आने वाली नस्लें कहां रहेंगी? उनके लिए अलग से जमीन होनी चाहिए। तब यह तय किया गया कि मिट्टी के घड़े में एक महीन सा सुराख कर दिया जाए। घड़े में पानी भर कर गांव के पहलवान के सिर पर रखकर कनैला के पास एक छोर से दूसरे छोर पर घुमाया जाएगा और पानी की बूंद जहां से निशान बनाती जाएगी वो जगह हमारे परबाबा के पिता को गिफ्ट कर दी जाएगी। इस प्रक्रिया में पूरे नकहा का सीवान उनको खेती के लिए दे दिया गया। हमारे परबाबा पिरई खां थे। पड़ोसी गोंडा का धानेपुर तालुका समृद्ध था। उनके तालुकेदार पाण्डेय वंश के सरयूपारीण ब्राह्मण थे। तालुके की सैन्य व्यवस्था कस्बे के पिरई खां के जिम्मे लम्बे समय तक रही थी। पिरई खां मौलवी अहमदुल्लाह शाह के मुरीद थे, जोकि उन्हें

आजादी के संघर्ष के लिए प्रेरित कर रहे थे। पिरई खां की अगुवाई में क्रांति के लड़ाकों ने अंग्रेजी हुकूमत को परेशान करके रख दिया। अपने क्रांतिकारी साथियों के साथ इस इलाके को रणभूमि में बदल दिया। पिरई खां एक कुशल सैनिक व युद्धनीति में माहिर शख्स थे। नगर रियासत के राजा उदय प्रताप सिंह और अमोढ़ा रियासत की रानी तलाश कुंवरि के क्रांति सहयोगी रहे पिरई खां, नाना साहब के साथ जीते जी फिरंगी सरकार के हाथ नहीं आए। बस्ती जनपद के बहादुरपुर ब्लाक अंतर्गत पूरा पिरई गांव में क्रांतिवीर पिरई खां की सातवीं पीढ़ी रहती है। क्रांतिवीर पिरई खां, जफर अली, जुमेराती, नसरूल्ला खां, मोहम्मद रजा खां, असलम खां के बाद शाह आलम राना अपने लड़ाका पुरखों की गौरवशाली विरासत को दिल में बसाए हुए हैं।

बीते समय के साथ पूरा पिरई गांव के बगल, बस्ती नगर के दक्षिण में महुआ डाबर नाम का क़स्बा गुलजार हुआ। शिल्पकारों, धनिकों और किसानों ने इस कस्बे को कला, वैभव और धान्य से पूर्ण कर दिया। इस कस्बे के उत्थान की साक्षी है, मनोरमा नदी जो इसे निहारते हुए पूरब को बह जाती है। मनोरमा को यह नाम जैसे इस कस्बे को स्पर्श करने से ही मिला था। वर्ष 1813 के सर्वेक्षण के अनुसार कस्बे में 9533 हिंदू परिवार और 693 मुस्लिम परिवार निवास करते थे। इस परिवारों में 3960 कुलीन वर्ग, 263 व्यापारी, 1669 शिल्पकार, 4334 किसान थे। मैनचेस्टर के आयातित कपड़ों को बेचने की नीति के तहत कंपनी शासन की निरंकुशता का सर्वाधिक शिकार जुलाहे और कारीगर हुए थे। इसी के चलते 1830 में मुर्शिदाबाद से रेशम के कारीगर आकर यहां बस गये, जिससे मुसलमानों की अच्छी खासी तादाद हो गई थी। यह बहुत ही संपन्न कस्बा था, जिसमें दो मंजिला मकानों की अच्छी खासी तादाद थी और शिक्षित वर्ग की भी ठीक-ठाक उपस्थिति भी। निवासियों की मेहनत और लगन की बदौलत महुआ डाबर ने खूब तरक्की कर ली थी। नदी के तट होने के साथ दूसरे नगरों व कस्बों से संपर्क सहज था, यह व्यापार के लिए अनुकूल था।

इसी बीच अंग्रेज अपनी निरंकुशता का विस्तार करने में लगे थे। गंगा का मैदानी क्षेत्र उसके लिए अवसरों से भरा था। अंग्रेजों ने यहां मनमाना लगान वसूलना शुरू कर दिया। ब्रिटिश हुकूमत की इस कुनीति ने किसानों और कारोबारियों को पूरी तरह से तबाह कर दिया था। कंपनी राज के शोषण के कारण ही 1857 में अवध में जबरदस्त जनविद्रोह हुआ, जिसमें समाज के हर तबके ने हिस्सा लिया। मेरठ से 9-10 मई, 1857 से बगावत की आग सुलगनी शुरू हो गयी। क्रांतिकारियों ने अंग्रेजी सेना के जुल्म व सितम से तंग आकर सबक सिखाने की ठानी। संयोग से वह मौका भी जल्द हाथ आ गया। इस कस्बे ने भी आजादी की लड़ाई में अपनी भूमिका तय की। स्थानीय निवासियों ने इस भूमि के गौरव को याद करके और आकर बसने वालों ने अंग्रेजों के जुल्म को याद करके उनके खिलाफ साझा मोर्चा तैयार किया।

बस्ती का रणकौशल फिर से जाग उठा था, और क्रांतिवीर पिरई खां की अगुवाई में उनके इंकलाबी साथी देश पर मर मिटने पर आमादा हो गए। 10 जून,1857 को अंग्रेजी सेना के लेफ्टिनेंट लिंडसे, लेफ्टिनेंट थामस, लेफ्टिनेंट इंग्लिश, लेफ्टिनेंट रिची, सार्जेन्ट एडवर्ड, लेफ्टिनेंट काकल व सार्जेंट बुशर फैजाबाद (अयोध्या) से बिहार के दानापुर (पटना) जा रहे थे। इधर, जफर अली के नेतृत्व में उनके गुरिल्ला क्रांतिकारी साथियों ने सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण मनोरमा नदी के किनारे अंग्रेजी सेना के कुख्यात अफसरों की घेराबंदी करके तब तक मारा, जब तक उनकी मौत नहीं हो गई। अंग्रेजी सेना के छह अफसरों की मौत के बाद तोपची सार्जेंट बुशर को घायल अवस्था में ललकारते हुए भगा दिया कि जाकर ब्रिटिश सरकार के आका को बता दो और बस्ती को आजाद घोषित कर दिया। थोड़ी दूर पर बसे एक परिवार ने इनाम के लालच में सार्जेंट बुशर को छुपा लिया और उसने ही अंग्रेजी हुकूमत के उच्च अधिकारियों को इस क्रांतिकारी घटना की जानकारी दी। अपने छह सैन्य अफसरों की मौत से बौखलाई अंग्रेजी सेना ने 20 जून,1857 को गोरखपुर के तत्कालीन मजिस्ट्रेट पेपे विलियम्स की अगुवाई वाले घुड़सवार फौजियों की मदद से हजारों की आबादी वाले महुआ डाबर कस्बे को घेर लिया। एक तरफ नृशंस फौज थी, दूसरी तरफ आम जन। इस एकतरफा लड़ाई में पूरे कस्बे को तहस नहस करने के बाद 'गैरचिरागी' घोषित कर दिया। यहां पर अंग्रेजों के चंगुल में आए बड़े-बुजुर्ग-बच्चों, औरतों के सिर कलम कर दिए गए। इनके शवों के टुकड़े-टुकड़े करके दूर ले जाकर फेंक दिया गया। हालांकि, पिरई खां बच निकले थे। उनका और उनके युवा पुत्र जफर अली का पता लगाने के लिए पेपे विलियम्स ने महुआ डाबर से गुलजार खान, निहाल खान, घीसा खान और बदलू खान पठान और भैरोपुर से गुलाम खान, चौकीदार रुदा खान आदि क्रांतिकारियों को 18 फरवरी 1858 सरेआम फांसी दे दी।

महुआ डाबर कस्बे में क्रूरतम दमन और अस्तित्व को मिटाने के लिए पेपे विलियम्स को ब्रिटिश सरकार ने सम्मानित भी किया। पेपे विलियम्स को वर्ल्ड ग्रांट मिली। बर्डपुर में उसको तमाम जमीनें मुफ्त में दे दी गई। सिद्धार्थनगर में विशाल जंगलों को नष्ट कर बर्डपुर में उसने अपना दहशत का साम्राज्य स्थापित कर लिया।

पिरई खां और साथियों ने महुआ डाबर का बदला लेने के लिए फिर से अपनी ताकत मजबूत कर 21 मई 1958 की सुबह 9 बजे पेपे विलियम्स के सम्राज्य पर हमला बोल दिया। दोनों तरफ से भयानक संघर्ष चला जिसमें करीब आधा दर्जन लोग मारे गए और घायल हुए। हथियारबंद आजादी के दीवानों की तैयारी के आगे पेपे विलियम्स को दो यूरोपियन्स के साथ जान बचाकर भागना पड़ा। बांसी राजा, निचलौल राजा और उतरौला के मुस्लिम जमींदार के साथ मिलकर क्रांतिकारियों ने पेपे विलियम्स के कारखाने, बर्डपुर हाऊस को आग के हवाले करने के बाद इस इलाके को अपने कब्जे में ले लिया। पेपे विलियम्स की संपत्तियों को क्रांतिकारी कई बार नुकसान पहुंचाते रहे और आखिकारकार 12 जून, 1859 को गुरिल्ला क्रांतिकारियों ने पेपे विलियम्स पर हमला बोल दिया जिसमें पेपे बुरी तरह घायल होकर बेहोशी की हालत में अपने घोड़े से नीचे गिर गया। सत्ता के दमन के आगे क्रांतिकारी प्रतिरोध की ज्वाला से झुलसकर पेपे विलियम्स को खाली हाथ हमेशा के लिए लंदन में शरण लेनी पड़ी। पिरई खां के पुत्र जफर अली अपने क्रांतिकारी साथी बलभद्र सिंह के साथ अंग्रेजों के नाक में दम करते रहे। हालांकि बहुत बाद में ब्रिटिश अधिकारियों ने अपनी बदनामी से बचने के लिए महुआ डाबर का 1860 में कुछ लोगों पर रूक-रुक कर बहुत ही नाटकीय मुकदमा भी चलाया है।

जफर अली देश-विदेश में 12 साल तक देश में सूफी फकीर के भेष में जनता को गोलबंद करते रहे। वर्ष 1869 के अंत में जफर अली को उनके तीन साथियों के साथ गिफ्तार कर शहीद कर दिया गया। इतना ही नहीं वर्ष 1871 में महुआ डाबर के मूल निवासी नबी खान और लाल खान को बंबई में फांसी देकर शहीद कर दिया गया।

मातृपक्षः मेरे नाना अब्दुर्रहमान खां तीन भाइयों में सबसे छोटे भाई थे। वे देवरिया जनपद के लंगड़ा गांव के जमींदार परिवार से थे। यह परिवार के ज्यादातर लोग ब्रिटिश सेना में रहें हैं। नानी का नाम नसीहन था। नाना की वंशावली राणा (राजपूत) से जुड़ी है। नाना भारतीय सेना में सेवा के बाद प्रथम पंचवर्षीय योजना के दौरान 1952 में बस्ती जनपद में जिलाधिकारी के ड्राइवर नियुक्त हुए। उन

Integral Research (Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal) ISSN: 3048-5991
Journal home page: https://integralresearch.in/, Vol. 02, No. 02, February. 2025

दिनों जिले में नई जीप आई थी और जो कि नाना के जिम्मे थी। डीएम कुरील से लेकर तहसीलदार सिंह तक को कई संकटों से नाना ने बचाया। कुरील मूलतः मध्यप्रदेश के थे जो नाना को मध्यप्रदेश अपने साथ ले जाना चाहते थे लेकिन नाना बस्ती में ही रहना चाहते थे तब विदाई से पहले तहसीलदार को डीएम ने बुलाया और पूछा बस्ती सदर की किस तहसील में सबसे ज्यादा जमीन खाली है। तो पता चला कि बहादुरपुर ब्लॉक अंतर्गत कनैला ग्राम पंचायत में सबसे ज्याद जमीन 60 बीघा खाली पड़ी है। तो डीएम ने कहा कि 40 बीघा खां साहब के नाम से पट्टा कर दो। कनैला गांव में मुस्लिम आबादी नहीं थी तो नाना ने कहा कि कनैला गांववासियों की सहमति जरूरी है तो ग्राम प्रधान ने कहा कि 30 बीघे का पट्टा ले लीजिये गांव की जमीन और कभी भविष्य में किसी काम में आ जाएगी। तो नाना को तीस बीघा जमीन बनकटा-देवनापुर में मिल गया। लिहाजा 1975-76 की चकबंदी में नाना ने अपने हिस्से की देवरिया जनपद की पैतृक जमीन भाईयों को गिफ्ट कर दी। नाना के तीन बेटे और एक बेटी थी। पूरी सम्पन्नता के बाद नाना ने तीनों मामा को तो शिक्षा दी लेकिन स्कूल दूर होने से अम्मा को नहीं पढ़ाया।

जन्मभूमिः बस्ती जनपद जिला मुख्यालय से करीब 20 किमी दूर पूरा पिरई गांव है यहीं मेरा जन्मस्थान है। हमारे पिता का नाम असलम खां है और मां का नाम आयशा बेगम है। पिता जी कुछ ही महीनों के रहे होंगे तभी बाबा की मौत हो गई थी। जिससे पिता

जी पढ़ नही पाए। मैं बचपन में ननिहाल रहा और 8वीं तक पढ़ाई कुसौरा में ऊर्दू मीडियम से करने के बाद झिनकूलाल इंटर कालेज, कलवारी से 12वीं पास की। हम तीन भाई और एक बहन हैं। इसमें सबसे बड़ा मैं ही हूं।

2. पत्रकारिता जगत में आपकी यात्रा और इतिहास के प्रति आपकी रुचि कैसे विकसित हुई? कृपया इस विषय पर अपने विचार साझा करें।

वर्ष 1999 में मैं आगे स्नातक की पढ़ाई के लिए अयोध्या आ गया और अनाथालय में रहने लगा। यहीं से सामाजिक सरोकारों, पत्रकारिता, कला, सिनेमा और इतिहास के प्रति रूझान बढ़ा। दरअसल बचपन से ही महुआ डाबर एक्शन के महानायकों की

कहानियां सुनता रहा और फैजाबाद आने पर उन्हीं दिनों जिला कारागार में शहीद-ए-वतन अशफाक उल्ला खां के शहादत स्थल पर दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। तभी से भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन पर जानने समझने की तरफ रूझान परवान चढ़ा।

3. अब तक आपने इतिहास के क्षेत्र में किन-किन विषयों पर कार्य किया है? कृपया संक्षेप में उन विषयों की जानकारी प्रदान करें।

हमने 1857 और चंबल, खुफिया संगठन मातृवेदी, चौरी चौरा जनविद्रोह, हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोशिएशन, एचएसआरए, लाल सेना सहित कई क्रांतिकारी एक्शनों-दस्तावेजों पर कार्य किया है। 2003-04 में अशोक जतिन के साथ एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म 'शक्ति-पुंज' के लिए शोध कार्य पूरा किया। 2005 में सूचना के अधिकार अधिनियम के तहत "घूस को घूसा" नाम से 15 दिनों का अभियान शुरू किया। 2006 में 'विरासत' नामक एक संगीत वीडियो लॉन्च किया जो बहुत लोकप्रिय हुआ और इसे मोहन सिंह (संसद सदस्य), संदीप दीक्षित और मेधा पाटेकर सहित पूर्व महानिरीक्षक और कार्यकर्ता एस आर दारापुरी ने रिलीज़ किया था।

वर्ष 2006 में 'अवाम का सिनेमा' नाम से एक अभियान शुरू किया जिसमें मऊ, आज़मगढ़, बरहज, चौरी-चौरा, कैथी, औरैया, इटावा, अयोध्या आदि क्षेत्र/जिले शामिल थे। बाद में यह आयोजन बिजनौर, राजस्थान, जम्मू और कारगिल तक फैल गया। वर्ष 2009 के दौरान डॉक्यूमेंट्री 'राइजिंग फ्रॉम द एशेज' बनाई, जिसने लोकप्रियता हासिल की और यह शरीफ चाचा के जीवन पर आधारित थी। बाद में भारत सरकार ने शरीफ चाचा को पद्मश्री से सम्मानित किया। मेरे प्रयासों से बरबाई, मुरैना में बिस्मिल पार्क का सौन्दर्यकरण, पुस्तकालय और गेस्ट हाउस बनकर तैयार है। बिस्मिल जी की समाधि स्थल बरहज, देवरिया में भी सभागार बनने का सरकारी बजट जारी हो गया है। शाहजहांपुर में शहीद ए वतन अशफाक उल्ला खां की मजार का सौन्दर्यकरण और सभागार का निर्माण हुआ। औरैया शहर के चौराहे पर गेंदालाल दीक्षित की विशाल प्रतिमा लगी और राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय,

अयोध्या में विशाल अतिथिगृह गेंदालाल दीक्षित के नाम पर बना जहां उनकी प्रतिमा भी लगाई गई। चंबल अंचल में हाथ से मैला ढोने की कुप्रथा पर आधारित देश की पहली फीचर फिल्म 'एक्सक्रीटा' के लिए हमने कार्यकारी निर्माता के रूप में काम किया, जिसे

भारत सरकार एनएफडीसी के एफबीआर अनुभाग में चुना गया था। गौतम बुद्ध के पूर्व जीवन पर बनी एक गैर-हिन्दी फिल्म में अभिनय किया। हमने होश संभालते हुए तय कर लिया था कि पढ़कर नौकरी नहीं करनी हैं लिहाजा जामिया मिल्लिया विश्वविद्यालय या जिन भी कैम्पस में रहा तो यहीं मकसद था कि कुछ अच्छे दोस्त बनेंगे जो मेरे मिशन में साझे तौर पर सहयोग करेंगे।

4. चंबल क्षेत्र के प्रति आपकी रुचि कैसे उत्पन्न हुई, और वहां की यात्रा ने आपके जीवन पर क्या प्रभाव डाला? कृपया इस बारे में विस्तार से बताएं। साथ ही, चंबल क्षेत्र में आपके संघर्षों और कार्यों की जानकारी दें।

वर्ष 2002 में एम एस डब्ल्यू की पढ़ाई के दौरान रामप्रसाद 'बिस्मिल' की आत्मकथा पढ़ने से चंबल अंचल में मेरी दिलचस्पी जगी। वर्ष 2004 में चंबल घाटी को समझने की यात्रा शुरू हुई। उन दिनों चंबल के बीहड़ खौफ के पर्याय थे। बीहड़ों में दस्यु दलो ने कहर बरपा रखा था। एक तरफ से प्रशासन दूसरी तरफ से दस्यु गैंगों के बीच अकेले पिसने की नियती थी। लिहाजा बार-बार बीहड़ों में बसता उजड़ता रहा। कई मित्र सुधीजन नाराज थे अपने कैरियर की हत्या कर रहे हो कि क्यों जान को जोखिम में डालते हो? पिता जी भी नाराज थे कि सब कुछ पुश्तैनी मटियामेट कर दोगे। कई सुधीजन कहते थे किसी दिन भूखे पेट हमेशा के लिए सोते ही रह

जाओगे। हम बस यही कहते कि देश में अनाज की कमी नहीं है और देश के लोग हमें भूखा नही मरने देंगे।

तीन प्रदेशों में फैले चंबल अंचल क्षेत्र के औरैया, इटावा, जालौन, भिन्ड, मुरैना, धौलपुर जनपदों और बाह तहसील में स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद भी कोई भी विश्वविद्यालय नहीं था। तय किया विश्वविद्यालय परियोजना पर काम करू तो 'चंबल विद्यापीठ' के नाम से शैक्षणिक गतिविधि चलाने का प्रयोग किया। इसके बाद भारतीय सेना के अंदर 'चंबल रेजीमेंट' बनाने को लेकर अभियान चलाया। चंबल इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल, चौरी-चौरा इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल, चंबल लिटरेरी फेस्टिवल, चंबल म्यूजियम, पंचनद दीप पर्व, चंबल हेरिटेज वॉक, चंबल मैराथन, चंबल शिखर सम्मेलन, चंबल कटहल फेस्टिवल, चंबल क्रिकेट लीग, नेशनल चंबल शूटिंग चैंपियनशिप की स्थापना मेरे द्वारा किया गया। चंबल आर्म्स रेसलिंग चैम्पियनशिप, कमांडर अर्जुन सिंह भदौरिया स्मृति समारोह, महुआ डाबर संग्रहालय, चंबल विद्यापीठ, चंबल पर्यटन, चंबल सैंड फेस्टिवल आदि गतिविधियां क्रांतिकारियों की स्मृतियों को ताजा करने के मकसद से मुहिम निरंतर चलती रहती हैं।

5. चंबल म्यूजियम की संकल्पना के बारे में बताएं और इसमें आपके प्रमुख सहयोगियों की भूमिका पर प्रकाश डालें। इसके भविष्य के विस्तार के लिए आपने कौन-कौन सी योजनाएं बनाई हैं?

चंबल अंचल को लेकर 2011 में चंबल अभिलेखागार बनाने को लेकर औरैया जनपद के जुहीखा गांव में पहल करने की सोची लेकिन बेरोजगारी के आलम में यह सपना जमीन पर उतर नहीं पाया। 2016 में दस्तावेजीकरण के लिए 13 जनपदों की साइकिल यात्रा की। उस समय चंबल की इतिहास, समाज, संस्कृति आदि के लिए कहीं कोई संदर्भ केन्द्र नहीं दिखा। तब हमने उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान के मुख्यमंत्री और राज्यपाल को चंबल संग्रहालय बनाने के लिए पत्र लिखा। चंबल जनसंसद में भी यह मांग प्रमुखता से उठी। लेकिन कोई हल नहीं निकला। वर्ष 2016 के आखिर में इटावा शहर के चौगुर्खी निवासी कृष्ण अवतार पोरवाल ने अपने घर का तलघर चंबल आर्काइव्ज के लिए दिया। दिन रात की मेहनत से और 22 सामग्री दानदाताओं की बदौलत चंबल अभिलेखागार ने रूप लेना शुरू कर दिया। 26 सितंबर 2018 को ऐतिहासिक उद्घाटन समारोह हुआ। कई शोधार्थी आने लगे। कई विश्वविद्यालयों से इस केन्द्र को मान्यता देने की बात चली। जिला प्रशासन इटावा ने विक्टोरिया मेमोरियल हाल निःशुल्क देने के लिए प्रस्ताव दिया। कृष्ण अवतार पोरवाल को हमने संरक्षक बनाया था। अब पोरवाल जी हमें रास्ते से हटाने का षड्यंत्र करने लगे, कई बार अपमानित करने की सारी हदें पार कर दी ऐसी परिस्थिति बनी की चंबल आर्काइव्ज की सारी सामग्री हमें छोड़नी पड़ी। बाद में उनकी साफ मंशा उजागर हुई कृष्ण अवतार पोरवाल ने चंबल आर्काइव्ज न्यास का रजिस्ट्रेशन कर स्वयं अध्यक्ष, बेटा उपाध्यक्ष और बहु कोषाध्यक्ष बन गए। बिखरते सपने के बीच नये सिरे से अपने आपको समेटा और इटावा के कुश कालोनी, चंबल आश्रम हुकुमपुरा, कमांडर अर्जुन सिंह भदौरिया के लोहिया गांव आदि चुनौतियों से जूझते हुए, कंजौसा, पंचनद, कालेश्वर गढ़िया,

पंचनद और चौरैला केन्द्र में चंबल संग्रहालय के फिर संग्रहित कर नये सिरे से समृद्ध किया। चंबल म्यूजिम देश-विदेश के शोधार्थियों के लिए बीहड़ में खिड़की खुली और उनका आना-जाना बना। चंबल संग्रहालय का कहीं से भी कोई अनुदान नहीं है। सारा काम वॉलिंटियर और सामग्री दान दाताओं के भरोसे चल रहा है। संग्रहालय कई सरोकारी गतिविधियां भी लगातार करता रहता है। आगे संग्रहालय में जितनी भी अंचल से जुड़ी सभी बौद्धिक सामग्री को पूरी तरह से डिजिटल करने पर कार्य कर रहे हैं। चंबल में बदलाव

की इबारत लिख रहे हैं। दस्तावेजों-धरोहरों को खोजते हैं, उन्हें संरक्षित करते हैं और विभिन्न गतिविधियों को मार्फत नई पीढ़ी को परिचित कराते हैं।

6. राम प्रसाद बिस्मिल जी से आपका लगाव कैसे हुआ? आपने उन पर अब तक क्या शोध किया है, और इस शोध यात्रा में आपको किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा?

क्रांतिकारियों को खोजने के जुनून में मुझे प्रताप प्रेस, कानपुर से प्रकाशित बालकृष्ण शर्मा नवीन द्वारा संपादित 'प्रभा' सितंबर 1924 का अंक मिला। जिसके कवर पेज पर गेंदालाल दीक्षित की तस्वीर के साथ अज्ञात नाम से 9 पेज की स्टोरी छपी है। यही रामप्रसाद बिस्मिल के बलिदान के बाद हूबहू बिस्मिल जी के नाम सहित 1928 में चांद के फांसी अंक में प्रिंट हुई है। कई वर्ष की मेहनत से रामप्रसाद के गुरु गेंदालाल दीक्षित की जीवनी पुस्तक लिखी। वर्ष 2016 में 2800 किमी की साइकिल से मई, जून, जुलाई महीने में बीहड़ों की यात्रा कर देश के सबसे बड़े गुप्त क्रांतिकारी 'मातृवेदी' पर दस्तावेजीकरण किया। मैनपुरी षड्यंत्र केस के नायकों और उनके वंशजों की खोज कर उनका सम्मान समारोह आयोजित किया। गोरखपुर जेल में बिस्मिल जी की कालकोठरी को संरक्षित करने के लिए मुहिम चलाई। बिस्मिल जी से जुड़ी किताबें, उनका संग्रह, काकोरी केस से जुड़े टेलीग्राम, पत्र, डायरी, समाचार पत्र, पत्रिकाए, मुकदमें की सभी फाइल आदि को देखने समझने का अवसर मिला। गेंदालाल दीक्षित के जन्मस्थान मई आगरा को पहचान दिलाने के लिए आमरण अनशन किया। क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास के कई तथ्यों और सबूतों से कई मिथक को विराम लगा। सरफरोशी की तमन्ना, काकोरी ट्रेन एक्शन आदि पर समझ बनी। कितनी चुनौतियां, अड़चने, रुकावटें रही हैं अकेले की यात्रा और बेरोजगारी का दंश, दिल पर जो गुजरी है उसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। काकोरी केस के नायकों को लेकर जो प्रिवी काउंसिल, लंदन में अपील हुई थी उस फाइल को राष्ट्रीय अभिलेखागार में देखने के लिए दो वर्ष का चक्कर लगाना पड़ा।

7. राम प्रसाद बिस्मिल जी की पारिवारिक पृष्ठभूमि और पहचान के बारे में आपके शोध में क्या निष्कर्ष निकले हैं?

मुरैना जनपद के अम्बाह तहसील में चंबल नदी के किनारे बरबाई गांव स्थित है जहां प्रसिद्ध तोमर वंश में रामप्रसाद बिस्मिल के दादा ठा. नारायण लाल सिंह रहते थे। बिस्मिल के दादा के तीन भाई थे। दो भाईयों का ही विवाह हुआ था। उस समय चंबल अंचल में भयानक सूखा पड़ा हुआ था। नारायण लाल सिंह के घर में बहुत कलह थी। आखिरकार बिस्मिल के दादा को मजबूरन अपने भाभी के असहनीय दुर्व्यवहार से बरबाई छोड़ना पड़ा। नारायण लाल सिंह अपनी पत्नी विचित्रा देवी, 8 वर्षीय बड़े बेटे मुरलीधर और 6 वर्षीय छोटे बेटे कल्याणमल को लेकर भटकते हुए शाहजहांपुर पहुंचे। वहां पर नारायण लाल सिंह ब्राह्मणवृत्ति करने लगे जिससे वे पंडित नारायण लाल कहलाने लगे। बिस्मिल के पिता जब 16 वर्ष के हो गये तो उनके दादा आगरा जनपद के पिनाहट के पास अपने ससुराल लेकर पहुंचे। मुरधीलर का विवाह नजदीक ही छदामी का पुरा, जोधपुरा में परिहार ठाकुरों की कन्या मूलमति से हुआ। विवाह के पांच महीने बाद सभी शाहजहांपुर आ गए। मुरधीलर को शाहजहांपुर के नगरपालिका में 15 रूपये मासिक की नौकरी मिल गयी। बाद में उन्होंने स्टाम्प बेचने का स्वतंत्र काम शुरु कर दिया। यहीं पर एक बालक का जन्म हुआ लेकिन उसकी मौत हो गई उसके बाद 11 जून 1897 में बिस्मिल का जन्म ननिहाल में हुआ। राम प्रसाद बिस्मिल के बलिदान के समय 19 दिसंबर 1927 से पूर्व दो बहनों और दो भाईयों का देहान्त हो चुका था। बलिदान के समय उनका छोटा भाई रमेश और 3 बहने बची थीं। भाई के बलिदान की खबर सुनकर छोटी बहन ने जहर खाकर जान दे दी। बिस्मिल की एक बहन ब्रह्मा देवी का विवाह कुचैला, मैनपुरी में हुआ था। बिस्मिल की बहन शास्त्री देवी का विवाह कोसमा मैनपुरी में जादौन ठाकुरों में हुआ था। शास्त्री देवी के पुत्र हरिशचन्द्र का विवाह छिरोड़ गांव मैनपुरी में हुआ था। राम प्रसाद बिस्मिल के कुल वंशज ठाकुर भीकम सिंह, ठाकुर कोक सिंह का परिवार आज भी बरबाई में रहता है। जिसे सरकार ने 27 बीघे का पट्टा भी दिया हुआ है। जिस जमीन पर आज भी गांव के दबंगो का कब्जा है।

जब गेंदालाल दीक्षित सहित तमाम क्रांतिकारी पुलिस के शिकंजे में आ गए और मैनपुरी षड्यंत्र केस में बिस्मिल जी का प्रमुखता से नाम आया तब बिस्मिल भूमिगत होकर कुछ दिन अपने बहन की ससुराल कोसमा में नौकर बनकर रहे तथा कुछ दिन दादाजी के गांव बरबाई में जाकर खेती-किसानी की। इस दौरान बिस्मिल ने दो-तीन पुस्तकें लिखीं। कुछ समय बाद वह अपने ननिहाल जोधपुरा

आ गए और यहीं पर उन्होंने 'सुशील माला' नाम से प्रकाशन शुरु किया। 'सुशील माला' प्रकाशन से पहली पुस्तक 'वोल्शेविकों की करतूत' छपी। यह रूस के क्रांतिकारियों के जीवन पर बिस्मिल का लिखा उपन्यास था। फिर 'कैथेराइन' नामक पुस्तक लिखी।

यह भी रूस की आजादी से संबंधित थी। एक अन्य पुस्तक '*मन की लहर*' राष्ट्रीय गीतों का संकलन है। इस पुस्तक के प्रकाशन की आर्थिक सहायता शाहजहांपुर की तहसील तिलहर के बाबू रघुनाथ सहाय एडवोकेट ने दी थी। अतः बिस्मिल ने, अपनी यह पुस्तक उन्हें ही समर्पित की थी। परिस्थितियां ऐसी बनी कि सबूत मिटाने के लिए बिस्मिल लिखी गई पांडुलिपियां को आग के हवाले करना पड़ा।

रामप्रसाद 'बिस्मिल' द्वारा लिखी पुस्तकेः

1. ***मैनपुरी षड्यंत्र-*** 22जनवरी, 1919 को बिस्मिल के साथ प्रयाग में एक ऐसी अप्रत्याशित घटना हुई जिसमें उन्हें आभास हुआ कि साथियों ने विश्वासघात किया है। इस घटनाचक्र को मध्य में रखकर उन्होंने यह पहली पुस्तक कोसमा (मैनपुरी) में लिखी थी। कुछ लोगों के मतानुसार बिस्मिल ने यह पुस्तक आर्य भास्कर प्रेस, आगरा से उस समय प्रकाशित कराई थी जब वो पिनाहट आगरा में रह रहे थे।
2. ***अमेरिका का स्वतंत्रता का इतिहास-*** इस पुस्तक के लेखन में स्वामी सोमदेव का भी सहयोग बिस्मिल को प्राप्त हुआ था।
3. ***मन की लहर-*** यह राष्ट्रीय कविताओं का संकलन है।
4. ***वोल्शेविकों की करतूत-*** रूस की वोल्शेविक क्रांति पर उपन्यास था जिसे बिस्मिल ने प्रो. राम के छद्म नाम से प्रकाशित कराया था।
5. ***यौगिक साधन-*** बिस्मिल ने अरविंद घोष की बंगला पुस्तक का हिन्दी में अनुवाद किया था।
6. ***क्रांति गीतांजलि-*** इसमें देशप्रेम के गीत और गजलें हैं।

7. ***कैथेराइन या स्वाधीता की देवी-*** बिस्मिल की इस पुस्तक को राष्ट्रीय ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, कलकत्ता से सन् 1922 में उमादत्त शर्मा ने प्रकाशित किया था।
8. ***स्वदेशी रंग-*** कभी यह पुस्तक आर्य समाज भवन शाहजहांपुर में थी।
9. ***क्रांतिकारी जीवन-***बिस्मिल की इस पुस्तक के कुछ ही अंश उपलब्ध हैं।
10. ***चीनी षड्यंत्र-(***चीन की राजक्रांति)
11. ***पंडित गेंदालाल दीक्षित-*** बिस्मिल ने यह पुस्तक अपने गुरू के बारे में लिखी थी जो प्रकाशित नहीं पाई थी। इसका संपादित अंश प्रभा पत्रिका में सितंबर 1924 के कवर स्टोरी के तौर पर छपा था। जिसे बिस्मिल ने अज्ञात नाम से लिखा था।
12. ***निज जीवन की एक छटा-***आत्मकथा

8. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के स्वर्णिम इतिहास से नई पीढ़ी को परिचित कराने के उद्देश्य से चंबल संग्रहालय, पंचनद, और काकोरी ट्रेन एक्शन के शताब्दी वर्ष पर आयोजित काकोरी एक्शन शताब्दी वर्ष समारोह अभियान के विषय में विस्तार से बताएं।

दरअसल महुआ डाबर संग्रहालय में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ी सामग्री संरक्षित कर रहे हैं। तो वही चंबल संग्रहालय में अंचल से जुड़े इतिहास, संस्कृति, प्रकृति, समाज, विरासत से जुड़ी बौद्धिक संपदा को संरक्षित किया जा है।

'काकोरी एक्शन शताब्दी वर्ष समारोह' का पहला आयोजन 8-9 अगस्त 2024 को गोरखपुर में हुआ। दूसरा आयोजन 7-9 दिसंबर 2024 अयोध्या में, 17-19 दिसंबर 2024 अंबाह, मुरैना में हुआ। स्वतंत्रता संग्राम के गौरवशाली इतिहास से नई पीढ़ी को परिचित कराने के मकसद से काकोरी केस के महानायकों से जुड़े अन्य स्थानों शाहजहांपुर, बरेली, कानपुर, गोण्डा, प्रयागराज, वाराणसी, औरैया, मेरठ आदि शहरों में कार्यक्रम करने के बाद 7-9 अगस्त 2025 को लखनऊ में इसका ऐतिहासिक और भव्य समापन होगा।

इस दौरान काकोरी केस के नायकों से संबधित पत्रों, डायरी, टेलीग्राम, स्मृति चिन्ह, समाचार पत्र, पत्रिकाएं, पुस्तकों, तस्वीरों, मुकदमें की फाइल आदि की प्रदर्शनी के साथ, सेमीनार, फिल्म प्रदर्शन, किस्सागोई, नाटक, रैली, क्विज, रंगोली और पेंटिग प्रतियोगिता के साथ-साथ विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम किये जाएंगे। समारोह को यादगार बनाने के लिए, दस्तावेजी फिल्म और पुस्तक का प्रकाशन भी किया जाएगा। आजादी आंदोलन के इस स्वर्णिम इतिहास से छात्रों में देशभक्ति की भावना जागृत होने के साथ वे समृद्ध भी होंगे।

9. अब तक आपने कितनी पुस्तकें लिखी हैं, और उन्हें कैसे प्राप्त किया जा सकता है? यदि आप भविष्य में किसी नई पुस्तक पर कार्य कर रहे हैं, तो कृपया उसकी जानकारी दें।

मातृवेदीः बागियों की अमरगाथा, बीहड़ में साइकिल, चंबल मेनिफेस्टो, आजादी की डगर पे पांव, कमांडर इन चीफ गेंदालाल दीक्षित, बंदूकों का पतझड़, कोरोना कारवास में युवा संघर्ष आदि पुस्तकें प्रिन्ट हुई हैं। इसमें से कुछ अमेजान से खरीदी जा सकती है। वर्तमान में महुआ डाबर जन विद्रोह, मैनपुरी षड्यंत्र केस और काकोरी केस के दस्तावेजों के हवाले से लिखने की योजना है।

10. अंत में, आप युवाओं को क्या संदेश देना चाहेंगे? साथ ही, उन्हें इतिहास अध्ययन की शुरुआत किस प्रकार करनी चाहिए?

स्तंत्रता संग्राम संघर्ष के स्थल आज वीरान हैं, क्रांतिवीरों के वीरता की बयानी के सबूत धुंधले हो चले है, जिसे कोई पढ़ नहीं पा रहा। क्रांतियोद्धाओं के त्याग और बलिदान को आज बिसरा दिया जा रहा। उनके स्थल आज भी रौनक के लिए तरस रहे हैं। आजादी के इतने वर्षों में ही हम सब कुछ भुलाने पर अमादा हैं। सवाल उठता है फिर हम याद क्या रखेंगे? इतिहास का अध्ययन प्रमाणिक तथ्यों के आधार पर करें। शिक्षा, कैरियर पर ध्यान दें। जहां कहीं भी रह रहे हैं समाज को खूबसूरत बनाने में अपना योगदान दें।

****